HISTORY

1

◆ उत्तर वैदिक काल में धर्म (Religion in the Later Vedic Period)

■ उत्तर वैदिक काल में धार्मिक जीवन: उत्तर वैदिक काल में लोगों के धार्मिक जीवन में अनेक परिवर्तन आये। इस समय वैदिक धर्म अपनी सरलता खोकर बहुत ही कठिन हो गया था।

■ नए देवताओं का उदय (Emergence of New God): ऋग्वैदिक काल के देवताओं जैसे की वरुण और सूर्य की पूजा तो होती रही, परन्तु उनका महत्व कम हो गया और उनके स्थान पर रुद्र, ब्रह्मा और विष्णु नामक नये देवताओं की पूजा होने लगी। रुद्र को एक महान और शक्तिशाली देवता माना जाता था और इसे शिव या पशुपति भी कहते थे। रुद्र के साथ-साथ विष्णु की भी प्रतिष्ठा बढ़ती गई और लोग उसे अपना रक्षक मानने लगे।

■ पुरोहित वर्ग की प्रधानता (Dominance of Priestly class):

उत्तर वैदिक काल में धार्मिक रीति-रिवाज बहुत बढ़ गए और जटिल हो गये। इसके परिणामस्वरूप ब्राह्मण वर्ग का प्रभाव बहुत बढ़ गया। यज्ञों और बलियों के महत्व

में बहुत वृद्धि हो गई। कुछ यज्ञ कई महीनों तक चलते रहते थे, और इन यज्ञो में 16 या 17 ब्राह्मणों का भाग लेना आवश्यक समझा जाता था। बलि देने की रीतियाँ बड़े ध्यान से सम्पन्न की जाती थीं। लोगो का यह विश्वास था कि इस कार्य में त्रुटियाँ रह जाने से देवता क्रोधित हो जाते हैं और शाप दे देते थे। यज्ञ करने वाले पुरोहितो या होत्रियों को बहुत-से उपहार अथवा दक्षिणा दी जाती थी।

पूर्ववैदिक काल में साधारण: लोग सब्जियाँ, अन्न अनाज, चावल और दूध देवताओं को भेंट चढ़ाते थे लेकिन उत्तर वैदिक काल में सोमरस और पशुओं की भेंट चढ़ाना सामान्य हो गया। लोग अपने-अपने घरो में अग्नि की पूजा करते थे। बड़े-बड़े राजा दूसरे राजाओं पर अपना प्रभुत्व करने के लिए अश्वमेध यज्ञ करते थे।